

कक्षा - 9

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 1

हिम्मत और जिंदगी

(रामधारी सिंह 'दिनकर' (1908-1974))

भाग – 1

कीर्ति बसुमतारी

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



रामधारी सिंह 'दिनकर'

कवि परिचय

जन्म : 1908 ई. बिहार प्रदेश के मुंगेर जिले के गंगा के उत्तरी तट पर स्थित गाँव सिमरिया में हुआ था।

शिक्षा : प्रारंभिक शिक्षा गाँव में ही पाकर, मैट्रिक की परीक्षा उन्होंने मोकामाघाट के हाईस्कूल से 1928 ई. में पास की। इसके बाद पटना कॉलेज से 1932 ई. में बी.ए. किया।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कार्य जीवन : 1934 ई. में उन्होंने बिहार सरकार में नौकरी आरंभ की और सन् 1952 तक विभिन्न पदों पर कार्य करते रहे। 1952 ई. में कांग्रेस ने उन्हें राज्य सभा के लिए मनोनीत किया। 1965 ई. में भारत सरकार ने उन्हें हिन्दी सलाहकार के पद पर नियुक्त किया। इस पद पर वे मृत्युपर्यंत बने रहें ।

पुरस्कार : उनकी गद्य की पुस्तक संस्कृति के चार अध्याय को साहित्य अकादमी पुरस्कार और काव्य-ग्रंथ उर्वशी को ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कृतियाँ : मिट्टी की ओर, अर्धनारीश्वर, देश-विदेश, उजली आग, भारत की सांस्कृतिक कहानी, रेती के फूल आदि। पद्य : प्रणभंग, रेणुका, हुँकार, रसवन्ती, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी आदि। दिनकर के निबंधों में विचारों की स्पष्टता और अभिव्यक्ति की सहजता एवं सजीवता का अद्भुत मेल है। उन्होंने सामाजिक जीवन, संस्कृति एवं राष्ट्रीय समस्याओं पर विचारोत्तेजक लेख लिखे हैं।

मृत्यु : 1974 ई.



हिम्मत और जिंदगी

जिंदगी के असली मजे उनके लिए नहीं है, जो फूलों की छाँह के नीचे खेलते और सोते हैं। बल्कि फूलों की छाँह के नीचे अगर जीवन का कोई स्वाद छिपा है तो वह भी उन्हीं के लिए है, जो दूर रेगिस्तान से आ रहे हैं, जिनका कंठ सूखा हुआ, ओंठ फटे हुए और सारा बदन पसीने से तर है।

रेगिस्तान : মৰুভূমি

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

पानी में अमृत वाला तत्व है, उसे वह जानता है, जो धूप में खूब सूख चुका है, वह नहीं जो रेगिस्तान में कभी पड़ा ही नहीं है। सुख देनेवाली चीजें पहले भी और अब भी हैं। फर्क यह है कि जो सुखों का मूल्य पहले चुकाते हैं और उनके मजे बाद में लेते हैं उन्हें स्वाद अधिक मिलता है। जिन्हें आराम आसानी से मिल जाता है, उनके लिए आराम ही मौत है।

तत्व : গুণ

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

जो लोग पाँव भीगने के खौफ से पानी से बचते रहते हैं, समुद्र में डूब जाने का खतरा उन्हीं के लिए है। लहरों में तैरने का जिन्हें अभ्यास है वे मोती लेकर बाहर आएँगे। चाँदनी की ताजगी और शीतलता का आनंद वह मनुष्य लेता है, जो दिन भर धूप में थक कर लौटा है, जिसके शरीर को अब तरलाई की जरूरत महसूस होती है और जिसका मन यह जानकर संतुष्ट है कि दिन भर का समय उसने किसी अच्छे काम में लगाया है।

ताजगी : সতেজতা तरलाई : শীতলতা

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

इसके विपरीत वह आदमी भी है, जो दिन भर खिड़कियाँ बंद करके पंखों के नीचे छिपा हुआ था और अब रात में जिसकी सेज बाहर चाँदनी में लगाई गई है। भ्रम तो शायद उसे भी होता होगा कि वह चाँदनी के मजे ले रहा है, लेकिन सच पूछिए तो वह खुशबूदार फूलों के रस में दिन-रात सड़ रहा है।

उपवास और संयम ये आत्महत्या के साधन नहीं है।

संयम : नियन्त्रण

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্র শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भोजन का असली स्वाद उसी को मिलता है, जो कुछ दिन बिना खाए भी रह सकता है। 'त्यक्तेन भुंजीथाः', जीवन को भोग त्याग के साथ करो, यह केवल परमार्थ का ही उपदेश नहीं है, क्योंकि संयम से भोग करने पर जीवन से जो आनंद प्राप्त होता है, वह निरा भोगी बनकर भोगने से नहीं मिल पाता।

बड़ी चीजें बड़े संकटों में विकास पाती हैं, बड़ी हस्तियाँ बड़ी मुसीबतों में पलकर दुनिया पर कब्जा करती है।

हस्तियाँ : মহান ব্যক্তিত্বৰ লোকসকল

अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने बाप के दुश्मन को परास्त कर दिया था, जिसका एक मात्र कारण यह था कि अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था और वह भी उस समय, जब उसके बाप के पास एक कस्तूरी को छोड़कर और कोई दौलत नहीं थी। महाभारत में देश के प्रायः अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे।

कस्तूरी : নৰ হিৰণৰ নাভিৰ পৰা ওলোৱা এক সুগন্ধি দ্ৰব্য

दौलत : সম্পত্তি

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্ৰ শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मगर फिर भी जीत पांडवों की हुई, क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी, क्योंकि उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था।

श्री विन्स्टन चर्चिल ने कहा है कि जिंदगी की सबसे बड़ी सिफत हिम्मत है। आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते हैं।

लाक्षागृह : পাণ্ডৱক হত্যা কৰিবলৈ কৌৰৱসকলে নিৰ্মাণ কৰা লাখৰ ঘৰ

विन्स्टन चर्चिल : দ্বিতীয় বিশ্বযুদ্ধৰ সময়ত হোৱা ব্ৰিটেনৰ প্ৰধান মন্ত্ৰী

सिफत : গুণ

जिंदगी की दो सूरतें हैं। एक तो यह कि आदमी बड़े-से-बड़े मकसद के लिए कोशिश करे, जगमगाती हुई जीत पर पंजा डालने के लिए हाथ बढ़ाए और अगर असफलताएँ कदम-कदम पर जोश की रोशनी के साथ अँधियाली का जाल बुन रही हों, तब भी वह पीछे को पाँव न हटाए।

पंजा डालना : লাভ কৰা
असफलताएँ : বিফলতা
अँधियाली : অন্ধকাৰ

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

दूसरी सूरत यह है कि उन गरीब आत्माओं का हमजोली बन जाए जो न तो बहुत अधिक सुख पाती हैं और न जिन्हें बहुत अधिक दुःख पाने का संयोग है, क्योंकि वे आत्माएँ ऐसी गोधूलि में बसती हैं, जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज सुनाई पड़ती है।

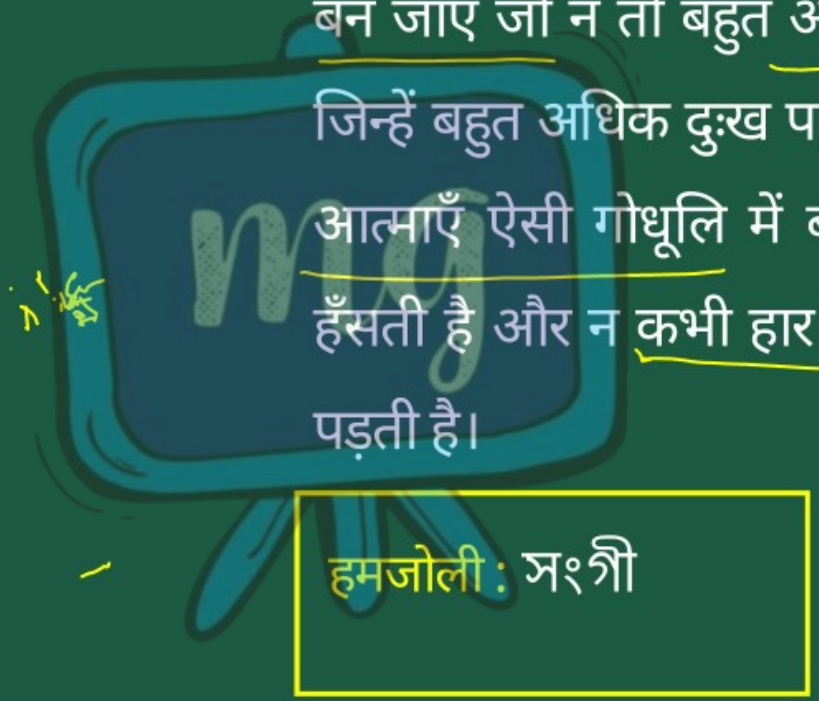

हमजोली : संगी

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্র শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation

इस गोधूलि वाली दुनिया के लोग बँधे हुए घाट का पानी पीते हैं, वे जिंदगी के साथ जुआ नहीं खेल सकते और कौन कहता है कि पूरी जिंदगी को दाँव पर लगा देने में कोई आनंद नहीं है?

अगर रास्ता आगे ही आगे निकल रहा हो तो फिर असली मजा तो पाँव बढ़ाते जाने में ही है।

बँधे हुए घाट का पानी पीता : প্রত্যাহবান অস্বীকাৰ কৰা

दाँव पर लगाना : বাজী লগোৱা

मूल्यांकन



1 | पानी में कौनसा तत्व है ?

A विष

B अमृत

C सुगन्ध

मूल्यांकन



2 चाँदनी की ताजगी और शीतलता का आनंद कैसा मनुष्य उठा पाता है ?

A जो दिनभर खेलता रहता है

B जो दिनभर सोता रहता है

C जो दिनभर धूप में थक कर लौटा है

मूल्यांकन



3 किन लोगों को सुख का स्वाद अधिक मिलता है ?

A जो सुखों का मूल्य पहले चुकाते हैं

B जो सुखों का मूल्य बाद में चुकाते हैं

C जो सुखों के बारे में सोचता रहता है

मूल्यांकन



4 'त्यक्तेन भुंजीथाः' का अर्थ है -

A उपवास एवं संयम

B त्याग के साथ जीवन भोग करना

C आलस करना

मूल्यांकन





5 | श्री विन्स्टन चर्चिल ने कहा है कि जिंदगी की सबसे बड़ी सिफत .....हिम्मत.....है।